216hi12

12

घर की देख-रेख

भोजन, आवास और कपड़े हमारी मौलिक आवश्यकताएँ हैं। इन प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। सभी जानवर अपने बच्चों के लिए बसेरा बनाते हैं। मनुष्य अपने बसेरे को घर या मकान कहता है। घर कई प्रकार के होते हैं। आपके रिश्तेदार गाँवों में छोटे घरों में रहते हैं। राधा की एक मित्र शांति एक फ्लैट में रहती है और उसकी अन्य मित्र रजनी शहर में एक बड़े से बंगले में रहती है। एक परिवार एक मकान में रहना शुरू करता है और अपनेपन, प्यार, स्नेह तथा संयुक्त रूप से विभिन्न कार्य करते हुए वह इस मकान को घर में परिवर्तित कर देता है।

चित्र. 12.1

हम सभी को रहने के लिए घर की आवश्यकता होती है, किन्तु प्रश्न यह है कि उसका चयन किस प्रकार किया जाए? चयन से तात्पर्य है कि एक घर में आपको क्या विशेषताएँ या विशेष गुण चाहिए। घर का चयन करते समय अनेक महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखा जाता है जैसे उसका स्थल, आस-पास का माहौल, स्वच्छता आदि। इस पाठ में आप इन प्रश्नों और ऐसे ही अनेक प्रश्नों के उत्तर जान पाएँगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप:

- एक घर के कार्यों का वर्णन कर पाएँगे;
- अपेक्षित गुणों विशेषताओं के लिए आप अपने घर के स्थल का मूल्यॉंकन कर पाएँगे।
- कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए अपने घर के विभिन्न क्षेत्रों की पहचान कर पाएँगे, और
- घर के अंदर तथा बाहर स्वच्छता बनाएँ रख पाएँगे।

12.1 घर के कार्य

सामान्य शब्दों में घर और मकान आपस में पर्याय रूप में प्रयोग किए जाते हैं किन्तु इनमें अंतर है।

मकान एक भौतिक निर्माण है जो ईंट, रेत, सीमेंट, पत्थर आदि से बनता है। चित्र 12.2	एक **मकान** उस समय **घर** बनता है जब परिवार के सभी सदस्य उसमें रहना शुरू कर देते हैं और सभी खुशी, प्रेम, स्नेह, स्वास्थ्य, आराम, संतोष के साथ सामाजिक तथा मनोरंजन गतिविधियों का आनन्द लेते हैं। **चित्र.** 12.3

अब आप समझ गए होंगे कि "घर" की अवधारणा मकान से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। एक मकान को घर में परिवर्तित करना पड़ता है। हम सभी घर के महत्व को समझते हैं। इसलिए घर के कार्यों को समझना कठिन नहीं है। एक अंग्रेजी कहावत में कहा भी गया है कि घर से अच्छा और कोई स्थान नहीं हो सकता है।

घर के कार्य

सुरक्षात्मक
- सुरक्षा प्रदान करता है
- मौसम के दुष्प्रभावों से बचाता है
- आश्रय देता है
- पशुओं, डाकुओं और शत्रुओं से सुरक्षा प्रदान करता है

आर्थिक
- 'पैसे' की कीमत समझता है
- सामाजिक आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाता है
- समाज में प्रतिष्ठा और सम्मान दिलाता है
- धन प्रदान करने वाली क्रियाओं का निष्पादन करने की क्षमता प्रदान करता है

शिक्षा संबंधी
- व्यक्तित्व का विकास एवं मूलभूत पारिवारिक मूल्यों को बढ़ाता है
- बाँटना, ध्यान रखना तथा समानुभूति आदि जीवन कौशलों को विकसित करने में सहायता करता है

सामाजिक/धार्मिक
- परिवार के भीतर व बाहर संवाद स्थापित करता है
- अपनेपन/अपनत्व के भाव को प्रदान करता है
- एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में मूल्यों एवं परम्पराओं को हस्तांतरित करता है

चित्र . 12.4

घर हमें न केवल आश्रय प्रदान करता है बल्कि सुरक्षा व अपनेपन का अहसास भी कराता है। यह परिवार के सभी सदस्यों की भौतिक तथा भावात्मक आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह बच्चों को बुजुर्गों का आदर करना, प्रेम स्नेह, स्वास्थ्य, धर्म, अनुशासन तथा उत्तरदायित्व की मौलिक शिक्षा प्रदान करता है। यह प्रेम से रहने तथा विभिन्न समारोहों को एक साथ मनाने का स्थान है। घर के कार्यों की सूची चित्र सं 12.4 में दर्शाई गई है।

12.2 घर के लिए स्थल का चयन

अब आप समझ गए होंगे कि हमारा घर हमारी बहुत-सी आवश्यकताओं को पूरा करता है। क्या आपको लगता है कि घर का चयन या उसका निर्माण करना आसान काम है? जी बिलकुल भी नहीं। इसमें अत्यधिक धन की आवश्यकता होती है और घर को बार-बार बदला भी नहीं जा सकता है। घर के संबंध में निर्णय लेते समय कुछ बिंदुओं को ध्यान में रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

जिस जगह पर हम अपने घर का निर्माण करते हैं उसे "स्थल" कहते हैं। घर के चयन के समय घर का स्थल महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। क्या आप इस बात से सहमत हैं? आइए देखें कि आप किस प्रकार अपने घर के लिए उचित स्थल का चयन कर सकते हैं।

- **आस-पड़ोस:** जहाँ घर का निर्माण करना है। उस स्थल के वातावरण तथा अड़ोस-पड़ोस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए घर उस स्थान पर होना चाहिए जो हर पहलू से विकसित हो। एक स्थान को विकसित तब कहा जाता है जब वहाँ बिजली, पानी, सड़कों आवागमन के साधनों तथा निकासी की उचित व्यवस्था उपलब्ध हो। आस-पास डाकघर, बैंक, स्कूल तथा बाजार आदि सामान्य सुविधाएँ भी उपलब्ध होनी चाहिए।

चित्र . 12.5

- **भौतिक विशेषताएँ:** स्थल का चयन करते समय एक खुले क्षेत्र में घर का चयन करना चाहिए। घर भारी यातायात के समीप नहीं होना चाहिए। यातायात के समीप होने से वायु व ध्वनि प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य तथा अन्य गतिविधियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। निचले स्थानों पर भी घर नहीं बनाना चाहिए क्योंकि वहां बाढ़ या पानी भराव का खतरा बना रहता है। ऊँचे स्थान पर घर होने से घर का परिदृश्य बेहतर नजर आता है।

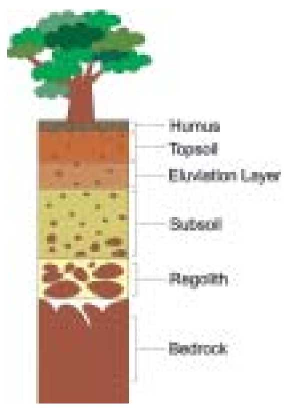

चित्र . 12.6

- **मृदा:** मकान की नींव मजबूत होनी चाहिए क्योंकि उस पर पूरा मकान टिका होता है। मकान की नींव वहाँ की मृदा की प्रकृति पर निर्भर करती है। मृदा सतह से 2 से 5 फीट नीचे तक ठोस होनी चाहिए तभी मजबूत नींव पड़ सकती है।

एक घर का निर्माण करते समय, उस क्षेत्र की मृदा की प्रकृति पर विचार करना भी अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। पोली मिट्टी में बनाए गए घरों में आगामी वर्षों में समस्या आ सकती है और मिट्टी के खिसकने के कारण मकान एक ओर झुक भी सकता है। रेतीली या बजरीली प्रकार की मिट्टी में मकान अधिक गर्म रहते हैं। पथरीली सतह नींव के लिए अच्छी होती है किन्तु इस प्रकार की भूमि पानी को अवशोषित नहीं कर पाती है, इसलिए निकासी पाइपों को बिछाने में काफी समस्याएँ आती हैं।

- **स्वच्छता संबंधी आवश्यकताएँ:** आपने ऐसे खाली प्लॉट देखे होंगे जिनमें कूड़ा-कचरा भरा होता है। ऐसे प्लाटों में मकान के निर्माण की सलाह नहीं दी जाती है। ऐसे प्लाटों में बनाए गए घरों की सतह असमान होती है और उनमें हमेशा निकासी की समस्या बनी रहती है। ऐसे स्थलों को नए सिरे से मिट्टी से भर कर उसे बाहरी सड़क के स्तर तक लाया जाना चाहिए।

चित्र.12.7

व्यावहारिक सुविधा: एक घर में रहने वाले वयस्कों को नौकरी पर जाना होता है और बच्चों को स्कूल या कालेज जाना होता है। अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हमें अपने घर के समीप बाजार की भी आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त यात्रा करने के लिए हमें यातायात सुविधाओं तथा रेलवे स्टेशन या बस स्टैंड की जरूरत पड़ती है। इसी प्रकार एक परिवार को घर के समीप अन्य व्यावहारिक सुविधाओं की भी आवश्यकता होती है जैसे डाकघर, बैंक, अस्पताल आदि। ये सुविधाएँ घर से पैदल दूरी पर ही होनी चाहिए।

चित्र. 12.8

गतिविधि 12.1

1. अपेक्षित विशेषताओं की तुलना में अपने घर का मूल्याँकन करें:

अपेक्षित आवश्यकताएँ	**आपके घर की मौजूदा विशेषताएँ (हाँ या नहीं)**	**क्या आप इनके सुधार में सहायता कर सकते हैं (हाँ या नहीं)** यदि हाँ, सुधार के लिए सुझाव प्रस्तुत करें।
विकसित क्षेत्र		
समान सामाजिक तथा आर्थिक स्तर		

खुले स्थान की उपलब्धता		
भारी यातायात से दूर		
भूमि से उठा हुआ		
उचित जल आपूर्ति		
बिजली		
पक्की सड़क		
निकासी और सीवरेज की सुविधा		
बैंक से समीपता		
डाकघर से समीपता		
बाजार से समीपता		
अस्पताल से समीपता		

12.3 घर के भीतर के क्षेत्र

हमारा घर विभिन्न भागों से मिलकर बनता है। एक आदर्श घर वह है जो परिवार को सभी कार्यों के लिए स्थान उपलब्ध कराता है। इसको समझने के लिए हमें पहले एक घर में किए जाने वाले कार्यों और गतिविधियों को जान लेना चाहिए। ये कार्य हैं भोजन पकाना, भोजन करना, सोना, स्नान करना, भंडारण, मनोरंजन, पढ़ाई करना आदि। इन अनेक गतिविधियों को करने के लिए हमें पर्याप्त स्थान की आवश्यकता होती है। यद्यपि यह संभव नहीं है कि हम सभी के पास सभी कार्यों के लिए पृथक स्थान हो। तथापि हम उपलब्ध स्थान का उचित प्रयोग करने तथा परिवार के सभी सदस्यों को आरामदायक स्थिति प्रदान करने के लिए प्रयास करते हैं। क्या आप घर के कार्यों को सुगमतापूर्वक पूरा करने के कुछ तरीकों का उल्लेख कर सकते हैं?

इस कार्य में निम्नलिखित सामान्य बिंदु आपकी सहायता करेंगे:

- सर्वप्रथम प्रत्येक कक्ष में किए जाने वाले सभी कार्यों की एक सूची बना लें।
- प्रत्येक कार्य के लिए स्थान निर्धारित कर लें।
- कार्यों को समूह में संयोजित करने का प्रयास करें जिन्हें एक ही समान स्थान पर पूरा किया जा सके। उदाहरण के लिए भोजन करने के स्थान को रसोईघर या बैठक कक्ष के साथ संयोजित किया जा सकता है या पढ़ाई के स्थान को बेड रूम के साथ जोड़ा जा सकता है।

- ध्यान रखें कि एक कमरे में अत्यधिक फर्नीचर रखकर उस कमरे को अधिक भरा-भरा न करें।
- बहु-उद्देशीय फर्नीचर का प्रयोग करें जैसे सोफा-कम-बैड। रात को सोफे को खींच कर सोने के बैड में परिवर्तित किया जा सकता है। भोजन करने की मेज को पढ़ाई के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है। दो या अधिक बक्सों को मिला कर उसे सैटी के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इस प्रकार का बहु-उद्देशीय फर्नीचर बाजार में उपलब्ध है।
- कुछ प्रकार के फर्नीचरों का प्रयोग भंडारण इकाइयों तथा कमरे के विभाजन के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए बैठक कक्ष को दोनों ओर की शैल्फ वाली रैकों से विभाजित किया जा सकता है। बैठक की ओर खुलने वाले शैल्फों में पुस्तकें रखी जा सकती हैं जबकि भोजन कक्ष या रसोई की ओर खुलने वाले खानों में क्रॉकरी का सामान रखा जा सकता है। सीढ़ियों के नीचे वाले स्थान को भंडारकक्ष या शौचालय में परिवर्तित किया जा सकता है।

आइए घर में विभिन्न प्रकार के कमरों का अध्ययन करें:

बैठक या संयुक्त बैठक-खाने का कमरा: इस कमरे में मेहमानों का आदर-सत्कार किया जाता है, यहाँ हम आराम से बैठ सकते हैं, पढ़ सकते हैं और मनोरंजन कर सकते हैं। यह भवन के प्रवेश द्वार के समीप होता है । कई बार छोटे घरों में इस कक्ष को भोजन कक्ष के साथ संयोजित कर दिया जाता है क्योंकि यह कमरा बड़ा होता है और इसमें पारिवारिक समारोह आसानी से किए जा सकते हैं। इस कमरे में फर्नीचर की व्यवस्था इस प्रकार की जाती है कि लोग आमने-सामने बैठ कर एक-दूसरे से आसानी से बातचीत कर सकते हैं। इस कक्ष में पढ़ने तथा अन्य प्रयोजनों के लिए अच्छी प्रकाश व्यवस्था की जरूरत होती है।

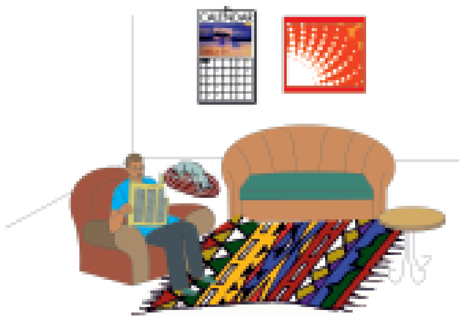

चित्र.12.9: बैठक कक्ष

शयनकक्ष: शयन कक्ष की व्यवस्था ध्यानपूर्वक की जानी चाहिए क्योंकि हम अपने जीवन का एक तिहाई समय विश्राम में तथा सोकर बिताते हैं। इसमें निजता होनी चाहिए तथा यह कक्ष शोर आदि से मुक्त होना चाहिए। पलंग तथा अन्य फर्नीचर व सामान की उचित व्यवस्था के लिए आयताकार शयनकक्ष उत्तम होते हैं। शयनकक्ष के साथ स्नानघर या शौचालय लगा हुआ होना चाहिए। इस कक्ष में एक शृंगार मेज भी होनी चाहिए।

चित्र.12.10: शयनकक्ष

स्नानघर: स्नान के स्थान, वाटर क्लोज़ेट(शौचगृह)तथा धुलाई का स्थल के संयोजन को स्नानघर कहते हैं। यहाँ फर्श को गैर-फिसलनभरा तथा आसानी से साफ होने वाला रखना चाहिए। स्नानघर की कम से कम एक दीवार में बाहर से उचित प्रकाश तथा वायु की व्यवस्था होनी चाहिए ताकि वहाँ घुटन न हो और हवादार हो।

चित्र.12.11: स्नानघर

रसोईघर: आदर्श रूप में रसोईघर को पूर्व या उत्तर पूर्व दिशा में होना चाहिए ताकि प्रातःकाल में सूर्यप्रकाश प्रत्यक्ष रूप में प्राप्त हो सके। सूर्यप्रकाश में विसंक्रामक गुण होते हैं जो कीटाणुओं को नष्ट कर देते हैं। एक रसोईघर में अच्छी निकासी व्यवस्था होनी चाहिए। स्वच्छता को बनाए रखने के लिए रसोई में जाली वाले दरवाजे होने चाहिए ताकि मक्खियाँ और मच्छर वहाँ प्रवेश न कर सकें। रसोई के कामों को सुगमतापूर्वक करने के लिए दिन व रात दोनों समय पर पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था होनी चाहिए। रसोईघर की एक दीवार घर के बाहरी छोर पर होनी चाहिए ताकि वहाँ से अच्छा प्रकाश तथा स्वच्छ वायु प्राप्त हो सके। भोजन पकाने से होने वाले धुएँ को निकालने के लिए एक (एग्ज़ास्ट फैन) भी लगाया जा सकता है।

चित्र: 12.12

रसोई में संवातन की अच्छी व्यवस्था अवश्य ही होनी चाहिए। रसोई की दीवारों का रंग हल्का होना चाहिए ताकि वह प्रकाश को फैला सके। परम्परागत भारतीय महिलाएं फर्श पर ही कार्य करती हैं। परंतु, आजकल शहरों में खड़े होकर रसोई का काम करने का प्रचलन है।

कमरों का ध्यानपूर्वक नियोजन तथा उपर्युक्त सुझावों का ध्यान रखकर हमारा परिवार एक आरामदायक जीवन व्यतीत कर सकता है।

गतिविधि 12.2

आप दो कमरों के घर में पढ़ाई के लिए स्थान बनाना चाहते हैं। इस घर में एक कमरा मुख्य रूप से सोने के लिए प्रयोग किया जाता है और दूसरा कमरा बैठक है जहाँ मेहमानों के साथ बैठ कर बातचीत की जाती है। इस कार्य के लिए अपनी योजना प्रस्तुत करें और साथ में अपनी योजना

के औचित्य भी प्रस्तुत करें। अपने उत्तरों और औचित्यों के लिए निम्नलिखित तालिका का प्रयोग करें।

कमरे/क्षेत्र	किसी अन्य गतिविधियों के लिए प्रयोग	सामने आने वाली समस्याएँ	पढाई के कमरे के लिए आपके सुझाव
बैठक			
शयनकक्ष			

पाठगत प्रश्न 12.1

1. नीचे दी गई गतिविधियों के सामने कार्य के प्रकार (सुरक्षात्मक आर्थिक, सामाजिक/धार्मिक तथा शिक्षाप्रद) को लिखेंः

	गतिविधि	कार्य
क	दिवाली मनाना	
ख	मेहमानों का आदर-सत्कार करना	
ग	बच्चों तथा बुजुर्गों की देखभाल करना	
घ	ट्यूशन पढ़ाना	
ड.	दूसरों का आदर करना सीखना और जिम्मेदार बनना	
च	परिवार के साथ मिलकर भोजन करना	

2. बताएँ कि स्थल के चयन का कौन सा पहलू निम्नलिखित परिस्थितियों से संबंधित है। एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

	परिस्थिति	स्थल की विशेषता
उदाहरण	खुला स्थान बच्चों को खेलने के लिए जगह उपलब्ध कराता है।	भौतिक स्वरूप
क	उचित जल आपूर्ति, बिजली, सड़कों तथा जल-निकासी सुविधा वाले क्षेत्र में घर	
ख	पोली मिट्टी वाली भूमि पर बने घरों की नींव कमजोर होती है।	
ग	कचरे से भरे प्लाट मकान निर्माण के लिए ठीक नहीं होते हैं।	

घ	बच्चे छोटी उम्र में ही स्कूल जाना शुरू कर देते हैं।	
ड.	ढलान वाली उठी हुई भूमि से जल की निकासी शीघ्र हो जाती है।	
च	एक शांत क्षेत्र में घर	

3. कॉलम क का कॉलम ख के साथ मिलान कीजिए। उत्तर बॉक्स में कॉलम ख से प्रतिउत्तर की सही संख्या को लिखें(i, ii आदि)।

	कॉलम क		कॉलम ख	उत्तर
क	आदर्श घर	i	मनोरंजन	
ख	छोटे कमरे	ii	एकांतता	
ग	बैठक कक्ष	iii	एग्जास्ट फैन/निकासी पंखा	
घ	स्नानघर	iv	सभी कार्यों के लिए स्थान उपलब्ध कराता है	
		v	बहुउद्देशीय फर्नीचर	

4. आप चाहते हैं कि आपका कमरा अधिक बड़ा दिखे। नीचे एक सेट में दो विकल्प दिए गए हैं। उस सेट का चयन करें जो सर्वाधिक उपयुक्त हो:

क. भारी फर्नीचर या हल्का फर्नीचर

ख. एकल प्रयोग फर्नीचर या बहु-प्रयोग फर्नीचर

ग. संयुक्त रसोई व भोजन करने का स्थान या रसोई व बैठक कक्ष

घ. हल्के रंग की दीवारें या गहरे रंग की दीवारें

12.4 घर के अंदर तथा बाहर स्वच्छता बनाए रखना

निम्नलिखित पहलुओं को ध्यान में रखते हुए अपने घर का अवलोकन करें:

क्या आपके घर में पर्याप्त सूर्यप्रकाश आता है? क्या वह पूर्णत: हवादार है? क्या आपका घर अंदर व बाहर से साफ-सुथरा रहता है? क्या आपके क्षेत्र में उचित जल-निकास तथा कचरा प्रबंधन प्रणाली विद्यमान हैं?

आइए, एक स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छता बनाए रखने हेतु महत्वपूर्ण पहलुओं की जाँच करें। ये महत्वपूर्ण पहलू हैं:

- प्रकाश
- संवातन/हवा
- सेनीटेशन/स्वच्छता

आइए, प्रत्येक पहलू की विस्तार से चर्चा करें।.

12.4.1 प्रकाश

घर के विभिन्न कार्यों को करने के लिए उचित प्रकाश व्यवस्था अत्यंत आवश्यक है। यह घर की सुंदरता को भी बढ़ाता है, विशेष रूप से रात्रि के समय। प्रत्येक घर में दो प्रकार की प्रकाश व्यवस्था होती है:

i. **प्राकृतिक प्रकाश:** प्राकृतिक स्रोत अर्थात सूर्य से प्राप्त होने वाले प्रकाश को प्राकृतिक प्रकाश कहते हैं।

ii. **कृत्रिम प्रकाश:** कृत्रिम स्रोतों से प्राप्त होने वाले प्रकाश को कृत्रिम प्रकाश कहते हैं जैसे ट्यूब लाईट, बल्ब आदि से प्राप्त प्रकाश।

प्राकृतिक प्रकाश

चित्र.12.13 : प्राकृतिक प्रकाश वाला घर

कृत्रिम प्रकाश

चित्र.12.14 : कृत्रिम प्रकाश वाला घर

जब आप अपने घर के लिए प्रकाश की व्यवस्था करते हैं तो आप यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि आपके घर के अधिकतर कमरों में दिन के समय सूर्यप्रकाश प्राप्त हो सके। क्या आप जानते हैं कि ऐसा क्यों है? इस प्रश्न का उत्तर आपके विज्ञान के पाठों में उपलब्ध है। सूर्य प्रकाश केवल रसोईघर या स्नानघर, जहाँ व्यापक स्तर पर पानी का प्रयोग किया जाता है, के लिए ही आवश्यक नहीं है बल्कि इसकी ज़रूरत सभी कमरों में होती है। यदि इन कमरों में सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँचेगा तो ये कमरे अंधेरे तथा घुटनभरे बने रहेंगे। ऐसे अंधेरे में मच्छर और कॉकरोंचों का प्रवेश आसान हो जाता है। इन कीटों के साथ घर में रहना स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होता है। इससे संक्रमण तथा कवक रोगों की संभावना बढ़ जाती है। आपने देखा होगा कि यदि पौधों को भी किसी अंधेरे कमरे में रख दिया जाए तो वे अपनी चमक खो देते हैं, लटक जाते हैं और मुरझाने लगते हैं।

कई बार घर के प्रत्येक हिस्से में प्राकृतिक प्रकाश प्राप्त करना संभव नहीं हो पाता है। इसलिए हम कृत्रिम प्रकाश का प्रयोग करते हैं। रात्रि के समय हमें कृत्रिम प्रकाश की आवश्यकता होती है। जब घर में कृत्रिम प्रकाश की व्यवस्था करें तो इस बात का ध्यान रखें कि यह कृत्रिम प्रकाश अधिक तेज नहीं होना चाहिए तथा इसकी व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिए कि इसका प्रकाश कार्य करने के स्थान पर पड़े न कि कार्य करने वाले व्यक्ति की आँखों पर। प्रकाश की चमक

सीधे आँखों पर पड़ने के कारण हमारे लिए देख पाना संभव नहीं होता है। इसके कारण आपकी आँखों में दर्द हो सकता है और उनमें से पानी भी निकल सकता है। आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पढ़ाई करने के लिए उचित प्रकाश व्यवस्था होनी चाहिए अन्यथा आपकी आँखें जल्दी ही थक जाएँगीं।

12.4.2 संवातन:

आप जानते ही हैं कि घरों में दरवाजे, खिड़कियाँ/रोशनदान तथा निकासी पंखा फैन होते हैं। इनका प्रयोजन बाहर की स्वच्छ वायु को घर के अंदर लाना है तथा अंदर की अस्वच्छ हवा को बाहर निकालना है। स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ वायु अत्यंत आवश्यक है। यही कारण है कि हम प्रयास करते हैं कि हमारे घरों में संवातन की उचित व्यस्था विद्यमान हो। इसे प्राकृतिक तथा कृत्रिम माध्यमों से पूरा किया जा सकता है।

संवातन का अर्थ है कि घर के अंतर ताजगी बनाए रखने के लिए स्वच्छ वायु का प्रवेश घर के अंदर किया जाए तथा अंदर की बासी हवा को बाहर निकाला जाए।

कमरों की खिड़कियों को खुला रखना चाहिए। यहाँ तक कि सर्दियों के मौसम में, अत्यधिक ठंड होने पर भी कमरे की कम से कम एक खिड़की को अवश्य ही खोल कर रखना चाहिए ताकि स्वच्छ वायु सुगमता से आपके घर में प्रवेश कर सके। कमरों में वायु का यह परिसंचरण काफी होना चाहिए ताकि कमरे के अंदरे के धुएँ, बदबू, नमी तथा भाप आदि को बाहर निकाला जा सके तथा सर्दियों के मौसम में कोल्ड ड्राफट को नियंत्रित किया जा सके। एक घर में वायु का संचरण/आवागमन की व्यवस्था की जानी चाहिए और इसके लिए घर के दोनों छोरों पर खिड़कियाँ बनाई जा सकती हैं या एक कमरे में दरवाजा व खिड़की को आमने सामने बनाकर भी इस प्रयोजन को पूरा किया जा सकता है।

चित्र .12.15

टिप्पणी

आपको यह याद रखना चाहिए कि भूमि की सतह स्तर पर वायु प्रवेश का स्थान रखने से ताजा हवा घर में आती है तथा सीलिंग के स्तर पर खुला स्थान देकर बासी या खराब हवा को बाहर निकाला जाता है।

12.4.3 स्वच्छता

क्या आप बता सकते हैं कि हमें अपने घर तथा आस-पास के क्षेत्र को साफ-सुथरा क्यों रखना चाहिए? रोगों को फैलने से रोकने तथा अपने आस-पास के वातावरण को स्वस्थ बनाए रखने के लिए हमें अनेक कार्य करने होते हैं और स्वच्छता बनाए रखने के लिए अनेक सुविधाओं का सृजन करना होता है। इनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं:

- साफ-सफाई बनाए रखना,
- कूड़े-कचरे को हटाना, तथा
- मल-मूत्र का उचित निष्कासन

आइए इन सभी बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा करें:

(क) साफ-सफाई बनाए रखना:

धूल-मिट्टी हमारे स्वास्थ्य की सबसे बड़ी शत्रु है क्योंकि अधिकतर रोगों का संचरण इसी के कारण होता है। साफ-सफाई ही स्वच्छता बनाए रखने का आधार है किन्तु यह कार्य अन्य किसी भी घरेलू कार्य की तुलना में सबसे बड़ा व व्यापक कार्य है। इसमें शारीरिक श्रम लगता है और घर को साफ-सुथरा रखने तथा परिवार को स्वच्छ व आरामदायक वातावरण उपलब्ध कराने में काफी समय की ज़रूरत होती है। घर में स्वच्छता बनाए रखने के लिए परिवार के सभी सदस्यों को प्रोत्साहित करें कि वे घर के प्रत्येक सामान को प्रयोग के पश्चात उसके निर्धारित स्थान पर ही रखें।

साफ- सफाई कई प्रकार की होती है। आपने देखा होगा कि आपके घर की साफ सफाई प्रतिदिन की जाती है। जबकि आपके भंडारगृह की सफाई सप्ताह या महीने में एक बार की जाती है। पूरे घर की सम्पूर्ण सफाई सामान्यतः दीपावली या किसी अन्य त्यौहार से पूर्व या किसी विशेष अवसर या समारोह जैसे परिवार में किसी का विवाह या जन्मदिवस समारोह आदि के समय की जाती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सफाई दैनिक, साप्ताहिक या मौसमी गतिविधि है।

साफ-सफाई के प्रकार

आइए, सफाई के प्रकारों तथा सफाई के दौरान की जाने वाली गतिविधियों का अध्ययन करें।

ड्राई क्लीनिंग

- फर्श पर झाड़ू व पोछा लगाना

- सतहों पर झाड़न से सफाई (डस्टिंग)
- दरियों व कालीनों की सफाई
- प्रातःकाल बिस्तर को ठीक करना
- वस्तुओं को सलीके से रखना

चित्र.12.16

साप्ताहिक सफाई

- विभिन्न क्षेत्रों के फर्श की व्यापक रूप से सफाई जैसे बाथरूम, शौचालय तथा वॉश-बेसिन
- मकड़ी के जालों को साफ करना
- रसोईघर के खानों की सफाई करना
- दरवाजों के हैंडलों/हत्थे तथा अन्य फिटिंग की सफाई करना।
- लकड़ी की सतहों तथा अन्य क्षेत्रों को पॉलिश करना।
- आइनों तथा तस्वीरों की सफाई करना।

मौसमी सफाई

- गद्दों, कुशन, तकियों, दरियों तथा कालीनों को हवा लगाने के लिए धूप में रखना।
- परदों को धोना
- पूरा फर्नीचर हटाने के बाद कमरों की व्यापक सफाई करना।
- भंडारगृह की सफाई करना।
- लकड़ी की वस्तुओं की सफाई व पॉलिश करना व उनके मरम्मत का कार्य।

चित्र.12.17

कमरों की सफाई के दौरान ध्यान रखे जाने वाले सामान्य बिंदु

- भारी कार्यों को साधारण बनाने में सफाई की विधियों का व्यापक ज्ञान सहायक होता है।
- घर को साफ-सुथरा रखने का एक तरीका यह है कि बाहर तथा अंदर के प्रयोग के लिए जूते-चप्पल अलग अलग होने चाहिए तथा घर के दरवाजों पर फुटमेट/पायदान होने चाहिए। इससे बाहर की धूल-मिट्टी अंदर नहीं आ पाती है।

- महीन जाली वाले दरवाजों और खिड़कियों के कारण धूल तथा कीटाणु घर में प्रवेश नहीं कर पाते हैं।

- दैनिक साफ-सफाई के दौरान सर्वप्रथम सबसे भीतरी भागों की सफाई करनी चाहिए तथा यह सफाई बाहर की ओर होनी चाहिए। सफाई का कार्य आरम्भ करने से पूर्व बिस्तरों की सफाई की जानी चाहिए। सफाई के दौरान दरवाजों और खिड़कियों को खोल लें ताकि स्वच्छ वायु घर में प्रवेश कर सके। कमरों की सफाई नरम झाड़ू से करें। दरियों और कालीनों को ब्रश से साफ करें। अंत में फर्श पर पोछा लगाना चाहिए। फर्श पर पोछा लगाने वाले पानी में फिनाइल जैसे विसंक्रामक का प्रयोग करना चाहिए।

समय और ऊर्जा की बचत करने के लिए घर तथा कार्य क्षेत्र में कार्य के सरलीकरण हेतु साफ-सफाई की उचित विधियों का नियमित रूप से प्रयोग करें।

विभिन्न प्रकार की सतहों तथा वस्तुओं की साफ सफाई

एक घर में विभिन्न प्रकार की सतहें होती हैं जैसे दीवारें, आईना, तस्वीरें, टाइल, शौचालय का फर्श आदि। इसके अतिरिक्त घर में अनेक वस्तुएँ होती हैं जिन्हें साफ किया जाता है जैसे प्लास्टिक के मग, बाल्टियाँ तथा धातु की वस्तुएँ। इन्हें साफ करने के लिए अनेक पदार्थों की आवश्यकता होती है:

सतह	अपेक्षित पदार्थ
फर्श	झाड़ू, ब्रश, साबुन, डिटर्जेंट, पानी, मिट्टी का तेल, नींबू तथा फिनाईल
सिरमिक टाइल, किचन या स्नानघर की टाइलें	साबुन या डिटर्जेंट, वाणिज्यिक टाइल क्लीनर, सिरका, हल्का हाईड्रोक्लोरिक अम्ल
प्लास्टिक के मग, बाल्टियाँ, कुर्सियाँ, नल आदि	गुनगुने पानी में साबुन या डिटर्जेंट का घोल, स्क्रबर, सिरका, मिट्टी तेल तथा सोडा
शीशे/आइने/खिड़कियों के शीशे	अखबार का गीला पैड, सिरका तथा वाणिज्यिक ग्लास क्लीनर
धातु के नल, ताँबे के नल	नींबू, सिरका, इमली, गर्म पानी व साबुन का घोल तथा नमक
लकड़ी की सतह	नर्म कपड़ा, हल्के साबुन के घोल से भीगा हुआ स्पाउंज तथा सिरका

पाठगत प्रश्न 12.2

1. नीचे दिए गए बाक्स में सफाई से संबंधित गतिविधियों को अव्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक गतिविधि को दैनिक, साप्ताहिक या मौसमी श्रेणी के अंतर्गत रखें।

डस्टिंग, दीपावली से पूर्व सफाई, फर्श पर झाड़ू लगाना, जाले हटाना, फर्नीचर को पॉलिश करना, धातु की वस्तुओं की सफाई, बिस्तर साफ करना, पर्दों को धोना, स्नानघर की सफाई करना, शौचालयों की टाईलों की सफाई करना, भंडारगृह की सफाई करना, ब्रश से कालीनों की सफाई करना, जल निकासी की सफाई करना, पोछा लगाना, वॉश-बेसिन की सफाई करना।

दैनिक गतिविधियाँ	साप्ताहिक गतिविधियाँ	मौसमी गतिविधियाँ

(ख) कूड़े-कचरे को हटाना: घर का कूड़ा, झाडू लगाने से एकत्र धूल तथा फल व सब्जियों को छीलने से इकठ्ठे अपशिष्ट पदार्थों को एक बंद या ढक्कनयुक्त कूड़ेदान में डालना चाहिए। इस कूड़े दान में पड़े अपशिष्ट पदार्थों को प्रतिदिन एक पैकेट में इकट्ठा करके गली में बने बड़े कूड़ेदान में डाल देना चाहिए। अपशिष्ट के निपटान की यह विधि अत्यंत प्रभावशाली है तथा स्वच्छता भी बनाए रखती है। घर में एकत्र अपशिष्टों में सामान्यत: दो प्रकार के अपशिष्ट पदार्थ होते हैं। रसोईघर का अपशिष्ट जैसे सब्जियों तथा फलों के छिलके आदि, जो जैव-निम्नीकृत(bio-degradable) होते हैं और घर के अन्य अपशिष्ट पदार्थ जैसे पॉलीथिन की थैलियाँ तथा प्लास्टिक की बोतलें जो गैर-जैवनिम्नीकृत होती हैं। इन दोनों प्रकार के अपशिष्ट पदार्थों को अलग अलग करके पृथक रूप से निपटान करना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में जैवनिम्नीकृत अपशिष्टों के निपटान के लिए एक गड्डा बनाया जाना चाहिए। इसे मिट्टी से ढकना चाहिए। कुछ समय के बाद यह अपशिष्ट खाद में परिवर्तित हो जाएगा जिसका प्रयोग रसोई के बगीचे में किया जा सकता है।

चित्र.12.18

(c) अपजल (गंदे पानी) का निपटान: हमारे घरों में व्यापक स्तर पर अपजल का सृजन होता है। स्नानघर, हाथों को धोने के स्थान तथा रसोईघर से अपजल या गंदा पानी निकासी पाइप के माध्यम से रसोई के बगीचे या सीड़गर्त में चला जाता है। हमें इस अपजल को घर के समीप एकत्र नहीं होने देना चाहिए। कुछ ऐसे स्थान भी हैं जहाँ निकासी प्रणाली की व्यवस्था नहीं हैं। सामान्यत: ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसा ही होता है। इसलिए, अपजल के निपटान के लिए सिक्तन गर्त सर्वोत्तम उपाय है।

(घ) मानव मल का निपटान - स्वच्छ शौचालय: रोगों को फैलने से रोकने के लिए मानव अपशिष्ट का उचित व स्वच्छ रूप से निपटान अत्यंत आवश्यक है। अन्यथा मक्खियों के भोजन पर बैठने, दूषित जल पीने, संदूषित कच्चे फलों व सब्जियों को खाने से रोगों का संचरण हो सकता है। जब हम नंगे पाँव चलते हैं, उस समय भी कीटाणु हमारे शरीर में प्रवेश कर सकते हैं।

आइए मानव मल या अपशिष्ट के सुरक्षित निपटान की कुछ विधियों का अध्ययन करें।

क. वॉटर क्लोजेट: अधिकतर बड़े शहरों में मानव मल की सफाई जल वहन प्रणाली द्वारा की जाती है। इस प्रणाली में घर के अपजल के साथ-साथ मल तथा मूत्र को भी निकासी तथा सीवरों की प्रणाली के माध्यम से जल द्वारा फ्लश किया जाता है। वॉटर क्लोजेट मानव शौच के लिए एक सेनिटरी संस्थापन है। यह एक पाईप के माध्यम से सीवर लाईन के साथ जुड़ा होता है।

चित्र.12.19: ऊंची सीट वाला वॉटर क्लोज़ेट

चित्र.12.20: उकडू पैन वॉटर क्लोज़ेट

मानव मल के निपटान के लिए वॉटर क्लोजेट प्रणाली सर्वाधिक स्वच्छ विधि है

सिक्तन गर्त

- ये उन क्षेत्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जहाँ निकास प्रणाली विद्यमान नहीं है।
- ये किफायती होते हैं तथा इनका निर्माण आसानी से हो जाता है।
- एक उपयुक्त सिक्तन गर्त 2 मीटर गहरा, 1 मीटर चौड़ा तथा घरेलू अपजल के अनुरूप पर्याप्त लंबा होना चाहिए।
- इस गर्त के एक-तिहाई भाग को पत्थरों विशेष रूप से अधिक जली हुई ईंटों के ¾ आकार के टुकड़ों से भर दें। बीच के भाग को छोटे पत्थरों व कंकरों से भर दें तथा ऊपरी भाग को रेत से भर दें।
- सिक्तन गर्त को मिट्टी तथा घास से ढक देना चाहिए।
- घर का अपजल निकास पाईप के माध्यम से सिक्तन गर्त में चला जाएगा। यह अपजल धीरे-धीरे रिसते हुए गर्त में चला जाएगा।
- सिक्तन गर्त को कभी भी कुएँ के पास नहीं बनाना चाहिए। क्या आप बता सकते हैं कि ऐसा क्यों? जी हाँ, इससे कुएँ का पानी दूषित हो सकता है।

यद्यपि, यह प्रणाली तब तक कार्य नहीं करती जब तक कि इस उद्देश्य के लिए पर्याप्त पानी न हो। इसके अतिरिक्त, ऐसी स्थिति में इसका निर्माण भी मँहगा पड़ता है।

यही कारण है कि भारत के अधिकतर गाँव और अनेक शहरों में क्लोजेट तथा निकास प्रणाली विद्यमान नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में गर्त शौचालयों या बोर शौचालयों का निर्माण किया जाना चाहिए।

ब. सेप्टिक टैंक: जैसा कि आप जानते हैं, मानव तथा अन्य अपशिष्टों के निपटान के लिए मल-निकास प्रणाली एक आदर्श समाधान है, किन्तु इसके निर्माण की लागत अत्यधिक होती है। इसके लिए अत्यधिक पानी की आवश्यकता होती है। एक अन्य विकल्प है सेप्टिक टैंक। इस प्रकार के टैंक अर्ध-शहरी क्षेत्रों में देखे जा सकते हैं जहाँ मल-निकास प्रणाली उपलब्ध नहीं है। इस विधि में मूलतः कंक्रीट के टैंक या गर्त का निर्माण किया जाता है। घरेलू निकास पाइपों को इन गर्तों के साथ जोड़ दिया जाता है।

आपने सुलभ शौचालय का लोगो तो अवश्य ही देखा होगा। इन सुलभ शौचालयों का निर्माण सेप्टिक टैंक के सिद्धांत पर किया गया है।

सेप्टिक टैंक के लाभ

- स्वच्छ
- ये वॉटर क्लोजेट प्रणाली की तुलना में कम लागत के तथा निर्माण में आसान होते हैं।
- ये भूमि को या भूमि जल को प्रदूषित नहीं करते हैं।
- दुर्गंध से मुक्त।

- रखरखाव में आसान तथा कम लागत ।
- परम्परागत फ्लश शौचालयों में 13-14 लीटर पानी की तुलना में इस प्रणाली में केवल 1.5 से 2 लीटर पानी की आवश्यकता होती है।
- गर्त को साफ करने की आवश्यकता नहीं होती है।
- गर्त में एकत्र अपशिष्ट से अच्छी खाद बन सकती है।
- इनमें निर्मित गैसें मिट्टी में ही मिल जाती हैं।
- मच्छरों, कीटाणुओं तथा मक्खियों को पनपने से रोकते हैं।

क. गर्त शौचघर: मानव शौच के लिए एक गर्त या गड्ढा तैयार किया जाता है। यह गर्त 3 मीटर से अधिक गहरा होना चाहिए। इससे मक्खियाँ नहीं होती हैं क्योंकि गर्त की इतनी गहराई में मक्खियाँ नहीं पनप पाती हैं। यहाँ मिट्टी रेतीली होनी चाहिए और इसमें मल के तरल भाग का निकास संभव होना चाहिए। अन्यथा यह गर्त बहुत जल्दी भर जाएगा। इसमें रोजाना पानी डालना चाहिए ताकि मल बहकर नीचे चला जाए और अपघटित हो जाए। यह व्यवस्था केवल कुछ दिनों के प्रयोग हेतु ही उचित है।

यहाँ छेद के मुहाने पर कंक्रीट का एक प्लेटफार्म या उठे हुए पैर के स्टैंड होते हैं। छेद के मुहाने को ढक्कन से बंद रखना चाहिए। इससे मक्खियाँ दुर्गंध की ओर आकर्षित नहीं होंगी और मल की दुर्गंध भी नहीं आएगी। यह प्रणाली अत्यधिक स्वच्छ प्रणाली नहीं है क्योंकि इससे भूमि जल के प्रदूषित होने की संभावना बनी रहती है।

गतिविधि 12.3

1. पता लगाएँ कि आपके घर में अपशिष्ट निपटान के लिए किस विधि का प्रयोग किया जा रहा है(ढक्कन वाला कूड़ेदान या बिना ढक्कन वाला कूड़ेदान)। अब घर के भीतर तथा बाहर स्थूल अपशिष्ट के निपटान के लिए आपकी मौजूदा अपशिष्ट निपटान विधि में आ रही समस्याओं का विश्लेषण करें। अब निम्नलिखित सूचनाएँ एकत्र करें:

   क. घर के भीतर

      i. अपशिष्ट का एकत्रण किस प्रकार किया जाता है?

      ii. कूड़ेदान की सफाई कितने दिनों बाद की जाती है?

      iii. क्या अपशिष्ट से बदबू आती है?

      iv. क्या आपकी निकास नालियाँ बंद हैं?

   ख. घर के बाहर

      i. क्या आपकी गली में अपशिष्ट या कचरे का ढेर लगा हुआ है?

ii. क्या वहाँ फैले कचरे से बदबू आ रही है?

iii. क्या अपशिष्ट या कचरे के पास जानवर एकत्र होते हैं?

iv. क्या बाहर बनी नालियाँ बंद हैं?

v. नगरपालिका का कूड़ाघर आपके घर से कितनी दूर है?

vi. क्या कूड़ेदानों की संख्या उत्पन्न कूड़े की मात्रा के लिए पर्याप्त है?

vii. कूड़ेदानों को कितने दिनों बाद खाली किया जाता है?

viii. क्या ये कूड़ेदान ढक्कनयुक्त हैं?

1. अपने स्थानीय मित्रों या अध्ययन केन्द्र के सहपाठियों के साथ निम्नलिखित विषयों पर चर्चा करें:

घर के भीतर तथा बाहर कचरे के निपटान की प्रणाली कितनी संतोषजनक है? वर्तमान समस्याओं को निपटाने/स्थिति में सुधार करने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं?

व्यक्तिगत स्तर पर	सामुदायिक स्तर पर	पंचायत/नगर पालिका के स्तर पर

पाठगत प्रश्न 12.3

1. नीचे दिए गए विवरण सही हैं या गलत

क. सूर्य प्रकाश हल्के विसंक्रामक का कार्य करता है।

ख. घर के भीतर रखे हुए पौधों को जब तीव्र प्रकाश वाले कमरे में रखा जाता है तो वे पीले पड़ जाते हैं।

ग. अंधेरे व घुटन वाले कमरों में रहने वाले व्यक्तियों के बीमार होने की संभावना अधिक होती है।

घ. वायु परिसंचरण से बासी हवा बाहर निकलती है और स्वच्छ वायु अंदर प्रवेश करती है।

ड. संवातक, कमरों को प्रकाश तथा स्वच्छ वायु प्रदान करते हैं।

2. घर के भीतर स्वस्थ वातावरण बनाए रखने के लिए प्रतिकारक संवातन महत्वपूर्ण क्यों है? घर में प्रतिकारक-संवातन बनाए रखने के तरीके सुझाएँ।

टिप्पणी

3. सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर पर (√) का निशान लगाएँ:

क. सीड़-गर्त किसके निपटान के लिए स्वच्छ विधि उपलब्ध कराते हैं: ....

i. कचरा

ii. अपजल

iii. मानव मल

iv. उपर्युक्त सभी

ख. सामान्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में जल वहन प्रणाली द्वारा मानव मल-मूत्र के निपटान की प्रणाली विद्यमान नहीं होती है क्योंकि इसके लिए : ....

i. प्रचुर मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है

ii. इसका निर्माण बहुत महँगा होता है।

iii. इसके लिए निपटान की सामान्य प्रणाली की आवश्यकता होती है।

iv. उपयुक्त सभी

ग. संवातन की आवश्यकता होती है:.................

i. पर्याप्त प्रकाश के लिए

ii. स्वच्छ वायु के संचरण के लिए

iii. पर्याप्त प्रकाश व स्वच्छ वायु प्राप्त करने के लिए

iv. कोई नहीं

घ. सामुदायिक स्तर पर मानव मल-मूत्र के निपटान की आदर्श विधि है:.................

i. वाटर क्लोजेट

ii. गर्त लैटरीन

iii. सेप्टिक टैंक

iv. इनमें से कोई भी

ङ. गाँव में कचरे के निपटान की आदर्श विधि के लिए किसके निर्माण की आवश्यकता है:.................

i. कचरा गर्त

ii. कूड़ेदानों का स्थापन

iii. शीटों के साईड पर कूड़े को फेंकना

iv. कोई नहीं

आपने क्या सीखा

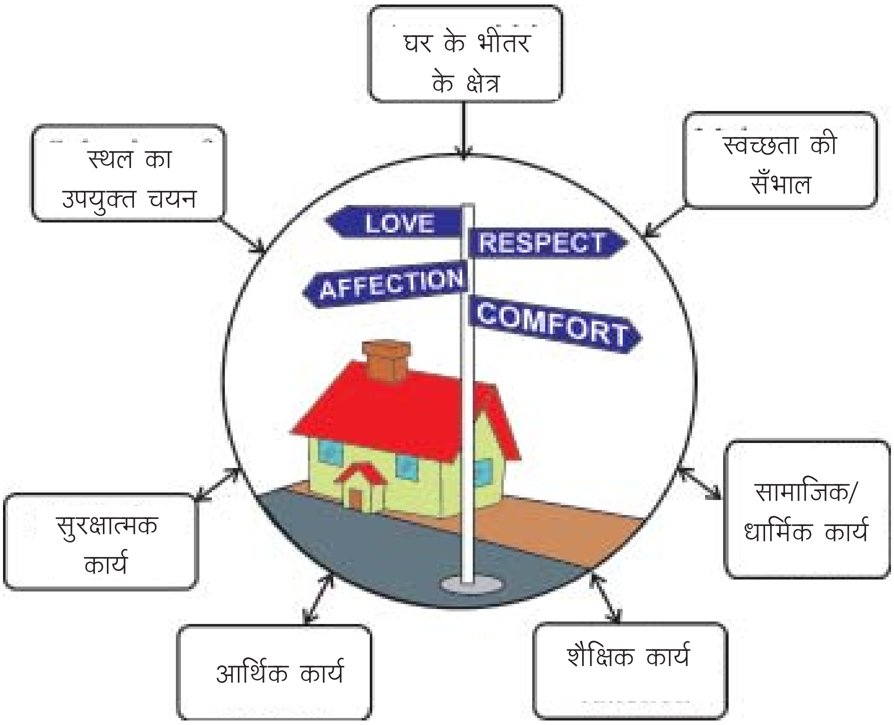

पाठांत प्रश्न

1. स्वच्छता बनाए रखने के लिए आपके घर द्वारा किए जाने वाले किन्हीं तीन कार्यों का उल्लेख करें।
2. एक घर का चयन करते समय ध्यान में रखे जाने वाले किन्हीं तीन महत्वपूर्ण बिंदुओं का उल्लेख करें और बताएँ कि आप इन्हें महत्वपूर्ण क्यों मानते हैं?
3. घर में प्रकाश के दो स्रोतों के नाम बताएँ और यह भी बताएँ कि ये स्रोत आपके लिए महत्वपूर्ण क्यों हैं?
4. संवातन के तीन लाभ बताएँ।
5. खराब प्रकाश व्यवस्था का आपके स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?
6. आपके अनुसार मानव मल-मूत्र तथा अपशिष्ट जल के निपटान की आदर्श प्रणाली कौन-सी है और क्यों?
7. काँच की खिड़कियों को साफ करने के लिए दो सफाई करने वाले कारकों के नाम बताएँ।

8. एक कमरे के मकान को कुछ बड़ा दिखाई देने के लिए आप किन दो तरीकों को अपनाएँगे।

9. एक अच्छे रसोईघर का अभिकल्प तैयार करने के लिए कोई तीन अनिवार्य नियोजन संकेत बताएँ।

10. रसोईघर में की जाने वाली किन्हीं चार गतिविधियों की सूची बनाएँ।

11. नीचे दर्शाई गई स्थिति का अवलोकन करें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

    दीपावली का त्यौहार आने वाला है किन्तु आपकी माँ की तबियत ठीक नहीं है। आप त्यौहार के लिए घर की सफाई तथा सजावट के कार्य में अपनी माँ की सहायता करना चाहते हैं, इसके लिए

    क. घर को साफ करने तथा सजाने के लिए की जाने वाली गतिविधियों की सूची तैयार करें।

    ख. इन गतिविधियों को एक क्रम में निर्धारित करें।

    ग. परिवार के विभिन्न सदस्यों को विशिष्ट कार्य सौंपे। ऐसा करते समय आप किस मापदंड को ध्यान में रखेंगे?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1

1. क. धार्मिक

   ख. आर्थिक

   ग. सुरक्षात्मक

   घ. आर्थिक

   ड. सामाजिक

   च. सामाजिक

2. 1. आस-पड़ोस

   2. मृदा की स्थिति

   3. स्वच्छता सम्बंधी आवश्यकताएँ

   4. व्यावहारिक सुविधा

   5. भौतिक विशेषताएँ

   6. व्यावहारिक सुविधा

3. iv - क

   v - ख

   I - ग

   iii - घ

12.2

पाठ के संदर्भ से

1.

दैनिक गतिविधियाँ	साप्ताहिक गतिविधियाँ	मौसमी गतिविधियाँ
डस्टिंग	जाले हटाना	दीपावली से पूर्व सफाई
फर्श पर झाड़ू लगाना	धातु की वस्तुओं की सफाई	पर्दों को धोना
बिस्तर साफ करना	शौचालयों की टाइलों की सफाई करना	भंडारगृह की सफाई करना
स्नानघर की सफाई करना	वॉश-बेसिन की सफाई करना।	
कमरों की साफ-सफाई करना	फर्नीचर को पॉलिश करना	
ब्रश से कालीनों की सफाई करना		
जल निकासी की सफाई करना		

12.3

1. क. सही ख. गलत ग. सही घ. सही ड. सही
2. यह कमरे में वायु के अच्छे संचरण को सुनिश्चित करता है।
   - क्रास संवातन वहाँ संभव है जहाँ घर की आमने सामने की दोनों दीवारों पर खिडकियाँ हों और दोनों खिड़िकियों से वायु अबाधित रूप से प्रवाहित हो सके।
   - दरवाजे और खिड़कियों को एकदूसरे के सामने बना कर किया जा सकता है।
3. क. ii ख. ii ग. ii घ. i ड. i